शक्ति की विशेषताएँ
(Characteristics of power)

शक्ति की अवधारणा से सम्बंधित उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि शक्ति की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं —

1 शक्ति की अवधारणा सम्बन्धात्मक है (the concept of power is Relational)
शक्ति की अवधारणा सम्बन्धात्मक है। इसका आशय यह है कि शक्ति उन दो पक्षों के सम्बन्धों को प्रकट करती है जिनमें एक के पास शक्ति होती है। और दूसरा वह जिस पर शक्ति का प्रयोग किया जाता है। शक्ति का धारण करने वाले पक्ष की स्थिति को अनुभव करने के लिए यह आवश्यक है कि जिन पर शक्ति का प्रयोग किया जाये, वे धारक की शक्ति से परिचित हों। इस प्रकार शक्ति की अवधारणा में एक पक्ष शक्ति रखने वाला होता है तथा अन्य पक्ष वे होते हैं जो उस शक्ति से प्रभावित होते हैं।

2 शक्ति परिस्थितियों पर निर्भर होती है (power depends upon situations)
शक्ति परिस्थितियों पर निर्भर करती है। परिस्थितियों के बदलने पर शक्ति का अनुभव कम या अधिक हो सकता है। लोकतांत्रिक व अधिनायकवादी परिस्थितियों की समीक्षा से इसे भली भांति समझा जा सकता है। सन 1975 के आपातकाल की स्थिति और इससे पूर्व की लोकतांत्रिक परिस्थितियों में शक्ति का भारतवासियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार अनुभव किया है।

3. शक्ति के पीछे अनुशक्तियाँ विद्यमान होती हैं (There are sanctions behind power) – शक्ति की अवधारणा अनुशक्तियों के अभाव में अकल्पनीय है। यद्यपि शक्ति के पीछे अंतिम अनुशक्तियों का स्वरूप दमनात्मक व उत्पीड़क होता है किन्तु वास्तविक अनुशक्तियाँ हैं प्रभाव, प्रोत्साहन व बल आदि।

4. शक्ति के लक्ष्य भी समान नहीं होते (the ends of power are not always the same) – शक्ति के आदर्श व उसके लक्ष्य सदैव बदलते रहते हैं। प्राचीन यूनानी दार्शनिकों की दृष्टि से शक्ति का लक्ष्य सामूहिक हित था, जबकि यथार्थवादी दार्शनिकों की दृष्टि में शक्ति का लक्ष्य सदैव व्यक्तिगत हित (individual interest) या स्वहित (self-interests) रहा है। वर्तमान में भी कल्याणकारी राज्यों का आदर्श जनहित ही माना जाता है। यद्यपि शक्ति धारक अनेक बार स्वहित की पूर्ति करते हुए दिखाई देते हैं।

5. यह सैनिक शक्ति से भिन्न है (It is different from military power) – जब हम सैनिक शक्ति की बात करते हैं तो हम हिंसा पर आधारित उस शक्ति की कल्पना करते हैं जो वास्तविक बल प्रयोग से सम्बंधित है किन्तु शक्ति से

आशय वास्तविक बल प्रयोग से न होकर बल प्रयोग करने की क्षमता से है।
अतः सैनिक शक्ति राजनीतिक शक्ति की अवधारणा से भिन्न होती है।
राजनीतिक शक्ति मुख्यतः मनोवैज्ञानिक है, इसकी यह मान्यता है कि कुछ
व्यक्ति अन्यों की क्रियाओं व उनके मस्तिष्कों को नियंत्रित करते हैं, अतः
इन्हें वास्तविक बल-प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती।

6 वास्तविक शक्तिधारकों की पहचानना कठिन होता है (It is difficult to identifying those who yield real power) — प्रत्येक समाज में ऐसे व्यक्ति होते हैं जो वास्तविक शक्ति रखते हैं और नीति निर्धारण आदि में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है किन्तु वे पर्दे के पीछे छिपे हुए होते हैं और उनको पहचानना कठिन होता है। चुनावों में राजनीतिक दलों को चन्दा देकर व अनेक प्रत्याशियों को विभिन्न प्रकार से सहायता देकर प्रतिनिधि विधायिकाओं में अपना प्रभाव स्थापित कर लेते हैं और बाद में पर्दे के पीछे रहकर सरकारी नीतियों के निर्धारण को प्रभावित करते हैं। इसी कारण स्टीफन एल. वास्बी का कथन है कि "समाज के अत्यधिक शक्तिशाली लोग वे हो सकते हैं जो पर्दे के पीछे रहते हैं या जो वातावरण को तथा समय-समय पर उठने वाले प्रश्नों को नियंत्रित करते हैं; वे नहीं जो प्रत्यक्ष प्रश्नों को सुलझाने में भाग लेते हैं।"

समाप्त